मिली रंधावा दम्पत्ति को, अमूल्य आध्यात्मिक सम्पत्ति

अनुभव **ठीक क्या है? वो यहाँ आकर पता चला। समझ आई कि ठीक क्या है? समझ आई कि लाइफ क्या है और ड्रामा में हमारा पार्ट क्या है। और कैसे ये ड्रामा चल रहा है। सभी लोग जो हमसे मिलते हैं या हम लोगों से मिलते हैं किसी का काम कैसे होता है, कोई अच्छे काम कर रहे हैं या बुरे काम रहे हैं। तो उन सभी का हिसाब-किताब चुक्तू हो रहा है, वो हमें पता चला। तो हमने इन्ट्रोस्पेक्शन से अपने अन्दर देखा कि जो-जो कुरीतियाँ हैं उसे इवैल्युलेट करना शुरु किया। तो करते-करते वो स्वभाव भी बदल गया, लोगों से व्यवहार भी बदल गया, चाल-चलन भी बदल गयी। तो सबकुछ बदल गया। ऐसा स्काउटिंग एंड गाइडिंग के स्टेट चीफ सद्धू सिंह रंधाव,पंजाब यूनीवर्सिटी चण्डीगढ़ व उनकी धर्मपत्नी का कहना है....**

स्काउटिंग एंड गाइडिंग का स्टेट चीफ सद्धू सिंह रंधाव, जो कि पंजाब यूनीवर्सिटी चण्डीगढ़ में कार्यरत हैं। इससे पहले एज्युकेशन डिपार्टमेंट में 1978 से काम करते हुए अलग-अलग पदों पर जैसे टीचर, हेडमास्टर, प्रिन्सीपल, डिप्युटी डायरेक्टर, डायरेक्टर आदि सभी ओहदे या पोस्ट पर कार्यरत रहे। उन्होंने शान्तिवन के इंटरनेशनल कॉन्फ्रेन्स में आकर यहां की व्यवस्था को देखा, समझा और अपने अनुभव को ओमशान्ति मीडिया से हुई बातचीत में सांझा किया, जिसके कुछ अंश यहां प्रस्तुत हैं।

प्रश्न: आध्यात्मिक यात्रा की शुरुआत कैसे हुई?

उत्तर: जिस समय मैं डायरेक्टर एज्युकेशन ऑफ पंजाब था। मुझे पता चला कि दोपहर को जब लंच ब्रेक होती है तब मेरे ऑफिस के कुछ लोग कहीं जाते हैं। तो एक दिन मैंने पूछा कि कहाँ जाते हैं ये लोग, तो उन्होंने बताया कि यहाँ एक क्लास होती है तो बोला कि सर आप भी जा सकते हैं। तो मैं उनके साथ एक दिन गया। तो दोपहर की क्लास मैंने की। दीदी जो क्लास कराते थे, मुझे लगा कि इस बहन को मैं कहीं मिला हूँ तो मैं जाना शुरु कर दिया ।

मैंने अपनी युगल को बताया कि ऐसा लगता है वो दीदी मुझे कहीं ना कहीं मिले हैं। तो मैंने पुरानी फोटो निकालने शुरु किये तो एक 1976 की फोटो मिली, ग्रुप फोटो जिसमें वो लड़कियां थीं वो मेरी क्लास फैलो निकली। तो फिर मैंने उसको बताया तो अच्छी तरह जाना शुरु कर दिया, जो मेरी हेज़ीटेशन थी वो खत्म हो गई, तो हमने खुलकर इस पर चर्चा की, और जो मेरे प्रश्न थे सभी का जवाब बाबा के ज्ञान से मिलना ही था।

प्रश्न: भक्ति और ज्ञान में कुछ अन्तर लगा?

उत्तर: कुलजिंदर जो मेरी युगल हैं ये भी खासकर के सुखमनी साहब, जपजी साहब का पाठ करती थी। जो पाठ करते थे उनमें बहुत-सी जो ज्ञान की बाते हैं वो जब बाबा का ज्ञान मिला तब क्लीयर हुई कि उसमें क्या लिखा है। पहले तो हम पाठ ही करते थे, रटन करते थे। उसकी क्लीयेरिटी आने से मुझे और भी अच्छा लगा। तो फिर पता चला कि ये प्रैक्टिकली है। और प्रैक्टिकली हम इनको कैसे लागू कर सकते हैं। कीर्तन में मुग्ध होते थे। कीर्तन हो रहा है। या तो सो जाते थे या मन कहीं और भटकता था। मन को कहाँ लगाना है? किससे लगाना है? कीर्तन का मन से क्या सम्बंध है? ये तो क्लीयर ही नहीं था। तो जाना कहाँ है और किसके साथ मन लगाना है? यही समझ नहीं थी। बिल्कुल भी नहीं थी। तो फिर पता चला कि योग जोड़ना किससे है, ये बात क्लीयर हुई है।

प्रश्न: पहले से आपको क्या लगा जो आपके स्वभाव में परिवर्तन आया?

उत्तर: जैसे क्रोध आ जाता था कि लोग ये ठीक नहीं कर रहे तो उसको ठीक कराना है तो क्रोध से ठीक कराते थे। गुस्सा होकर या पनिशमेंट देकर और कोई जो नेगेटिव करा सकते थे तो नेगेटिविटी से ठीक करवाना चाहते थे। टाइम बींग लगता था कि वो ठीक हो गया है लेकिन अन्दर से वो लोग और गुस्सा हो जाते थे और उससे भी बड़ा गलत काम करते थे। तो और ज़्यादा नुकसान हो जाता था। तो अब मेरे ऑफिस वाले कहने लगे कि सर आप तो कोई कोर्ट केस भी आ जाये, इतनी बड़ी कोई प्रॉब्लम भी आ जाये, पूरे डिपार्टमेंट पंजाब की थी फिर भी आप नहीं घबराते, लाइटली लेते हो। और बड़े आराम से डिक्टेट करा देते हो, केस का समाधान ये है। पहले कोई ऑफिस में आने से पहले थोड़ा घबराते थे, सोच-समझकर आते थे, लेकिन अब ऐसा नहीं है। अब किसी को कोई प्रॉब्लम है तो सीधे आके मिल भी लेते हैं, बैठते हैं और बातें सुनना भी पसन्द करते हैं। ज्ञान की बातें चल रही हैं। एक भाई कोई आया है या बहन आई है तो दूसरे भी आकर बैठ जाते हैं। तो बोले ये तो सत्संग हो गया सर। तो वे बोलते हैं कि ये तो जैसे कोई सत्संग हो गया।

प्रश्न : कोई अच्छा अनुभव बाबा के साथ?

उत्तर : कभी कोई प्रॉब्लम आती है तो मैं उससे डरता नहीं हूँ जबकि पहले मैं उससे डर जाता था कि क्या होगा, क्या होगा। कोई कोर्ट केस है या कोई प्रॉब्लम आ गई है या कोई बड़ी प्रॉब्लम आ गई है तो सोचते हैं कि बाबा अपने आप कर देगा, और निश्चिंत हो जाते हैं। और वो वैसे ही होता है। पता भी नहीं चलता वो कब ठीक हो जाता है।

मधुबन आने के बाद जब ज्ञान सरोवर में आशा दीदी से मिले। तो दीदी ने मुझे वरदान दिया और बाहर आते ही वो सिद्ध हो गया। दीदी ने मुझसे कहा कि आप इतनी अच्छी सेवायें कर रहे हो, आप बढ़ रहे हो और हमेशा आगे बढ़ते ही रहेंगे। उनसे बात करने के थोड़ी देर बाद ही मुझे चण्डीगढ़ से फोन आ गया कि आपका प्रमोशन कर दिया गया है, आप आज ही आकर ज्वाइन कर लो। जिस प्रमोशन के लिए हम काफी समय से कोशिश कर रहे थे और नहीं हो पा रहा था, वो यहां आने के बाद हो गया। मुख्यमंत्री द्वारा फाइल भी क्लीयर हो गई।

प्रश्न: बाबा की सेवा के लिए आप क्या कर रहे हैं।

उत्तर: हमने अगेंस्ट वल्गेरिटी एंड वायलेन्स, जो हमारा सभ्याचार हैं, हमारे गीत हैं, वीडियोज़ हैं, फिल्में हैं उसमें जो वल्गेरिटी और वायलेन्स है उसे खत्म करने के लिए, उसके अगेंस्ट आवाज़ उठाने के लिए एक प्रोजक्ट चलाया है। बच्चों को न केवल उसे पसन्द नहीं करना है, बल्कि उन्हें रिजेक्ट करना है। उसका विकल्प भी लेकर आना है जैसे कोई अच्छे गीत बनाने हैं, कोई अच्छी वीडियो बनानी है तो वो भी उस प्रोजक्ट के निहित किया जायेगा।

परमात्मा से मिली समस्या के समाधान की शक्ति

श्रीमती रंधावा : मेरा नाम कुलजिंदर कौर रंधावा है। मैं गवर्नमेंट सीनियर सेकेन्डरी स्कूल में अग्रेंजी में लेक्चरार के पद पर लगी हूँ। पहले मुझे किसी भी काम को करने में बहुत डर रहता था और जब कभी भी कोई प्रॉब्लम आती थी तो उसको मैं फेस नहीं कर पाती थी। लेकिन जब से मैं इस ज्ञान से जुड़ी हूँ या माउंट आबू आने लगी हूँ या क्लास करने लगी हूँ तो मुझमें कॉन्फीडेंस आ गया है। अब कोई भी प्रॉब्लम आ जाये तो मुझे लगता है कि बाबा मेरे साथ है और मैं इस प्रॉब्लम को हल कर लूंगी। 2006 से हम दोनों साथ ही इस संस्था से जुड़े हैं। जो मेरा स्कूल है वहाँ भी सबको पता है कि मैं ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ी हुई हूँ। स्कूल में भी जब किसी को कोई प्रॉब्लम हो जाती है, तो वो मेरे पास आ जाते हैं कि मेरे पास उनकी समस्या का हल मिलेगा। तो उस समय परमात्मा से ही मुझे कोई ऐसी शक्ति मिलती है कि उसकी प्रॉब्लम को हल्का कर देती हूँ।

कण्डेला-उ.प्र.। राज्यपाल रामनाईक जी व सांसद हुकुम सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. बबिता।

फतेहगढ़-उ.प्र.। पत्रकारों को योग भट्ठी कराने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सूर्य, ब्र.कु. सुमन व पत्रकारगण।

कुल्लू-हि.प्र.। लाईस्किल एज्युकेशन कैम्प के समापन समारोह में सम्बोधित करते हुए नगर परिषद अध्यक्ष ऋषभ कालिया। मंचासीन हैं रोट्री क्लब प्रेसीडेंट सुखदेव मसीह, चंडीगढ़ से ब्र.कु. गौरव, ब्र.कु. राजेन्द्र बहन व अन्य।

गुरसहायगंज-उ.प्र.। विधायक अरविंद यादव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. नीलम। साथ हैं प्रधानाचार्य पंचकली जी।

रावर्ट्सगंज। डिस्ट्रीक्ट जज धर्मवीर सिंह को राखी बांधते हुए ब्र.कु. सुमन। साथ हैं ब्र.कु. प्रतिभा।

बोकारो-स्टील सिटी। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित रंगारंग कार्यक्रम में भाग लेने वाले बच्चों के साथ सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कुसुम, ब्र.कु. सुमन, ब्र.कु. मायाराम व अन्य।